अभिनव कदम

८-९

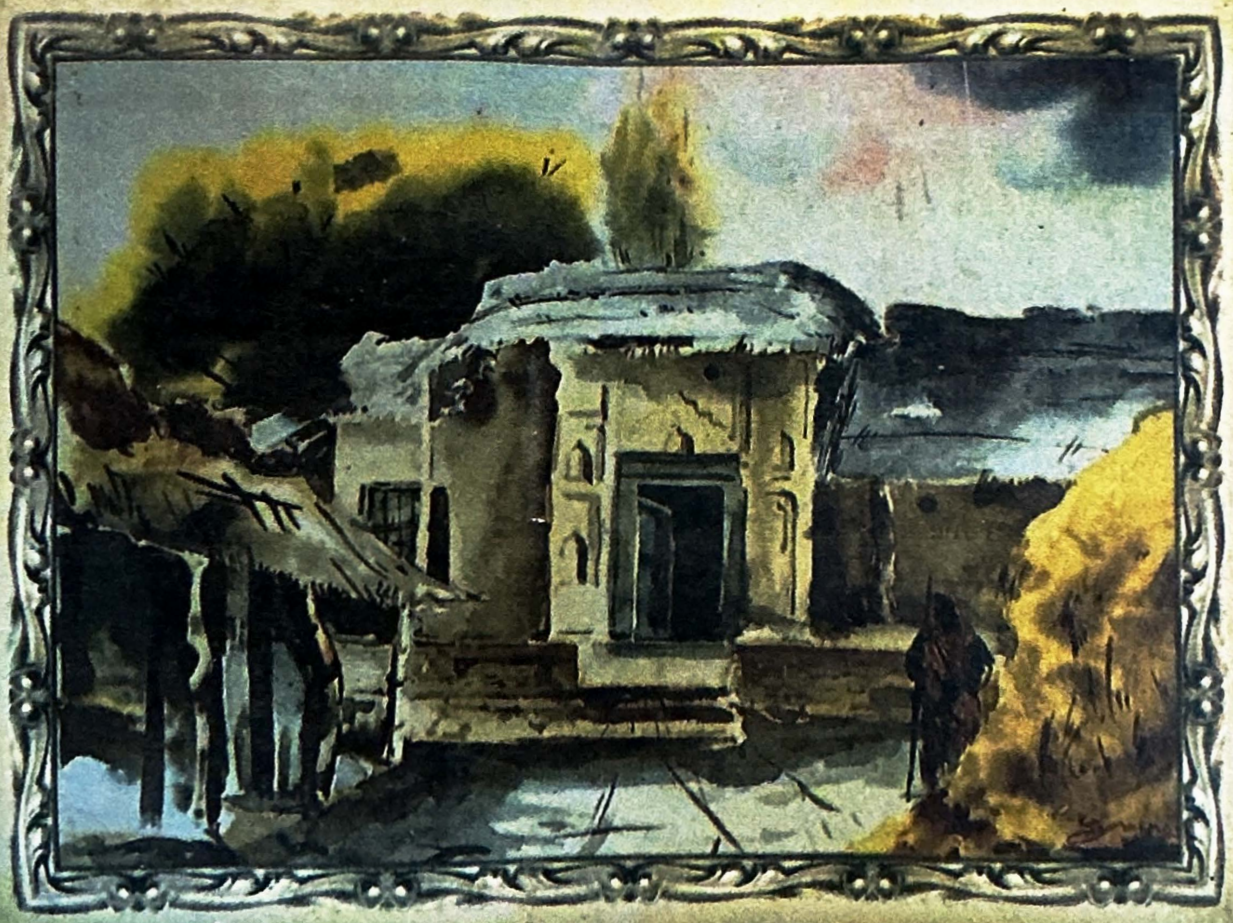

'ये गली
वो रास्ते
वो खिड़कियाँ
क्यों हुई खामोश
ये मत पूछिये।
खून नन्हें मेमनों का
क्यों हुआ
उन फसादी
रहजनों से पूछिये।'

अभिनव कदम

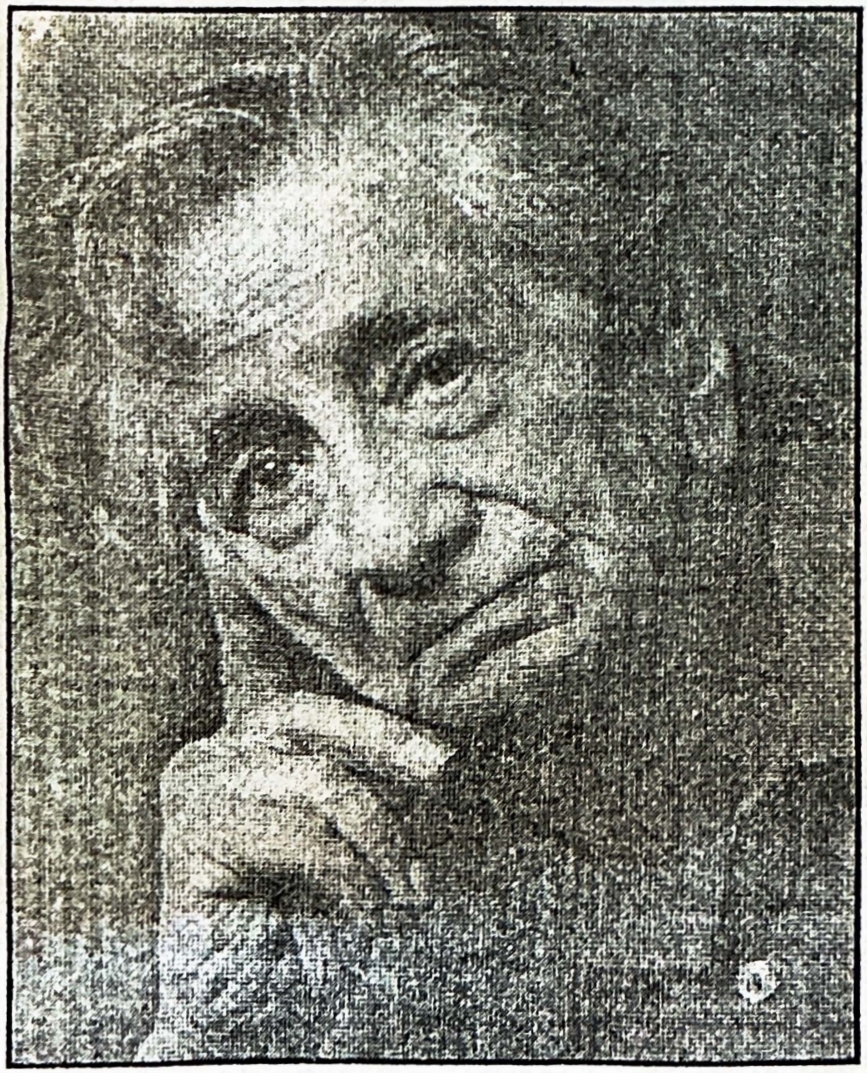

यह अंक कथाकार भीष्म साहनी को
सादर समर्पित

भीष्म साहनी, राजेन्द्र रघुवंशी, लक्ष्मीकान्त वर्मा, शिवमंगल सिंह सुमन, शिवानी, हरिवंश राय बच्चन, आचार्य सत्यदेव को अभिनव कदम की श्रद्धांजलि।

अभिनव कदम–१० : कैफ़ी आज़मी विशेषांक

मऊनाथ भंजन से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका अभिनव कदम के राही मासूम रज़ा अंक की लेखकों व पाठकों के वीच लोकप्रियता ने हमारी संकल्प शक्ति को संबल प्रदान किया है। राही अंक के साथ ही यह घोषणा की गई थी कि सार्थक रचनात्मक सहयोग मिलने पर अभिनव कदम का अगला कोई अंक उर्दू के ख्यातिलब्ध साहित्यकार, इप्टा (रंगमंच) के वुनियादी स्तम्भ, धर्मनिर्पेक्ष, समता मूलक समाज की स्थापना हेतु आजीवन वैचारिक रूप से प्रतिवद्ध, सिनेमा जगत में सतत रचनात्मक भूमिका में संलग्न कैफ़ी आज़मी पर केन्द्रित किया जायेगा। अपने संकल्प के अनुरूप अभिनव कदम परिवार ने यह निश्चय किया है कि अभिनव कदम-१० को कैफ़ी आज़मी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित कर प्रकाशित किया जाय। यह कठिन कार्य आपके रचनात्मक सहयोग से ही संभव हो सकेगा। अभिनव कदम परिवार को यह पूरा विश्वास है कि जिस तरिके से लेखकों, विचारकों, पाठकों का सकारात्मक सहयोग अब तक मिलता रहा है वैसा ही सहयोग कैफ़ी आज़मी विशेषांक हेतु अवश्य मिलेगा। निम्न सन्दर्भित विन्दुओं पर आपके रचनात्मक सहयोग की प्रतीक्षा रहेगी :-

१. कैफ़ी आज़मी से संबंधित संस्मरण, जीवन के विविध पड़ाव पर टिप्पणियाँ।
२. कैफ़ी आज़मी से वैचारिक लगाव व प्रतिबद्धता संबंधी लेख।
३. कैफ़ी आज़मी के जीवन का अन्तिम दौर और मिज़वा (जन्म भूमि), आजमगढ़ की माटी से लगाव।
४. कैफ़ी आज़मी की प्रकाशित कृतियों पर लेख।
५. कैफ़ी आज़मी का उर्दू साहित्य में योगदान।
६. कैफ़ी आज़मी के समकालीन उर्दू के साहित्यकारों से संबंधित तुलनात्मक लेख।
७. कैफ़ी आज़मी के लेखन की विविध विधाओं पर अलग-अलग लेख।
८. इप्टा (रंगमंच) और कैफ़ी आज़मी के विविध पक्ष।
९. सिनेमा जगत में (बम्बई) कैफ़ी आज़मी की विविध भूमिका।
१०. सामाजिक सरोकार के प्रश्नों पर कैफ़ी आज़मी की भूमिका पर लेख।
११. उर्दू में प्रकाशित कैफ़ी आज़मी के लेख तथा कैफ़ी आज़मी पर उर्दू में लिखे गये लेखों का हिन्दी लिप्यान्तर।
१२. कैफ़ी आज़मी के पत्रों तथा कैफ़ी आज़मी को लिखे गये पत्रों की छायाप्रति। यदि उर्दू में हो तो हिन्दी लिप्यान्तर।
१३. कैफ़ी आज़मी की अप्रकाशित रचनाओं का हिन्दी लिप्यान्तर।
१४. कैफ़ी आज़मी के व्यक्तिगत जीवन से जुड़े व्यक्तियों की टिप्पणियाँ।

अतः आप से विनम्र अनुरोध है कि ऊपर संदर्भित विषयों से जुड़े लेख जनवरी २००४ तक भेजने का कष्ट करें साथ ही अंक की सार्थकता के लिये यदि अन्य कोई पक्ष आपकी दृष्टि में शेष रह गया हो तो हम आपके रचनात्मक सहयोग की प्रतीक्षा करेंगे। ❐

– जय प्रकाश धूमकेतु

संस्थापक संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, उत्तम चन्द

जनसंस्कृति के पक्ष में आयोजन – समय

वर्ष : ६ अंक : ८-९ (संयुक्तांक)

नवम्बर २००२ - अक्टूबर २००३

अभिनव कदम

: प्रधान संपादक

चन्द्रदेव राय

: संपादक :

जयप्रकाश धूमकेतु

: संपादन सहयोग :

शिवकुमार पराग, राघवेन्द्र प्रताप सिंह

: प्रसार व्यवस्था :

श्रीमती राजेश्वरी, जितेन्द्र मिश्र

: संपर्क :

२२३, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा

मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.) २५७१०१

फोन (०५४७) २२३११३

आवरण : प्रभाकर

: सहयोग राशि :

यह अंक	५०/-
वार्षिक	१००/- (दो अंक)
आजीवन सदस्यता	१०००/-

प्रकाशक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'मंथन' मऊनाथ भंजन (मऊ)

कम्पोजिंग ऋतिक कम्प्यूटर प्रिन्टर्स, मऊ दूरभाष : २२२२४८८

प्रिंन्टिग सुदर्शन ऑफसेट, ३०८ रानी मण्डी, इलाहावाद : दूरभाष- २६५१३६३

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

क्र.सं.	पाठ का नाम	लेखक	
२४.	स्वाधीनता आन्दोलन से सामाजिक आन्दोलनों का सम्बन्ध और प्रेमचन्द	जितेन्द्र श्रीवास्तव	२०७
२५.	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता	गिरीश काशिद	२२५
२६.	वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता : कुछ अव्यस्थित टिप्पणियाँ	चन्द्रदेव यादव	२३२
२७.	भाषान्तर : **तेलुगु कहानी** बच्चों की रुलाई : अल्लम् विरप्पा अनु: एन आर श्याम देशान्तर : **पाकिस्तान की उर्दू कहानी**		२४०
२८.	रिजर्व शीट - इन्तिजार हुसेन : लिप्यान्तर : अब्दुल विस्मिल्लाह		२४८
२९.	राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी का काव्य विवेक	श्रीमती मृदुला शुक्ला	२५४
३०.	अनुभूति जन्य स्वतःस्फूर्त अभिव्यक्ति का आख्यान है : शिवानी का कथासंसार	श्रीमती कंचन राय	

कविताएँ

३१.	रामनिहाल गुंजन की कविता	२६६
३२.	रेणु प्रकाश की कविता	२६७
३३.	शैलेन्द्र चौहान की दो कविताएँ	२६९
३४.	सुधांशु कुमार मालवीय की एक कविता	२७१
३५.	रामानुज त्रिपाठी की तीन कविताएँ	२७४
३६.	प्रमोद कुमार की तीन कविताएँ	२७६
३७.	प्रवीण श्रीवास्तव की तीन कविताएँ	२७९
३८.	देवेन्द्र कुमार आर्य के तीन गीत	२८१
३९.	अवधविहारी श्रीवास्तव के पांच गीत	२८४
४०.	कमल किशोर श्रमिक की चार गजलें	२८८
४१.	नईम साहिल की चार गजलें	२९०
४२.	प्रभा दीक्षित की चार गजलें	२९२
४३.	मालविका की चार गजलें	२९४

पुस्तक समीक्षा

४४.	यथार्थ के धरातल पर खड़ी मानवीय अस्मिता की कहानियाँ	सजय राय	२९६
४५.	मानवीय रागात्मकता के सुरक्षित कोने	कान्तिकुमार जैन	३०२
४६.	कबहू मन विश्राम न माने	जितेन्द्र श्रीवास्तव	३०७
४७.	काला पहाड़ : मेव जीवन का आईना	प्रेमलता जैन	३१४
४८.	उड़ान के पहले : गीत में आज की कविता का कथ्य	विवेक प्रियदर्शन	३१९

गोष्ठी रपट

४९.	राही मासूम रज़ा विशेषांक का लोकार्पण कार्यक्रम	चन्द्रदेव यादव	३२१
५०.	निराला का सामाजिक सरोकार	चन्द्रकान्त	३२५
५१.	उ.प्र.प्रगतिशील लेखक संघ का सम्मेलन	जयप्रकाश धूमकेतु	३२७
५२.	'भीष्म साहनी के लिए लिखना अनुष्ठान था'	नानक चंद	३३३
५३.	रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र		३३५

संपादकीय

अपने एक लेख में कथाकार विजय मोहन सिंह भीष्म साहनी को याद करते हुये लिखते हैं कि भीष्म जी के लेखन में 'गमे जानां कम है गमे दौरां ज्यादा है' यह सूत्र वाक्य भीष्म साहनी के व्यक्तित्व और कृतित्व के आंकलन का आधार वाक्य है। एक और सन्दर्भ में विजय मोहन सिंह कहते हैं कि ''भीष्म जी की सभी रचनाओं में जीवन को खुली आंखों से देखना ही प्रधान रहा है और उसमें विचार धारा चुपके से 'हृदय की राह' प्रवेश करके उनकी जीवन दृष्टि का निर्माण करती है। मस्तिष्क की नहीं इस हृदय की राह की भूमिका ही उनके सारे कृतित्व का चरित्र और व्यक्तित्व का निर्धारण करती है।''

भीष्म जी कागद की लेखी पर कम आंखिन की देखी पर ज्यादा यकीन करते हैं। कबीर की तरह दुनिया की रंगशाला में 'कबिरा खड़ा बाजार में' या फिर 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला' के सिर्फ नाटककार ही नहीं हैं भीष्म साहनी बल्कि कबीर और भगत सिंह के जीवन मूल्यों को धरोहर मानते हुये उन जीवन मूल्यों के जीवनहार भी हैं। एक समर्थ रंगकर्मी जो जीवन की रंगशाला और नाटक के मंच पर एक जैसा दिखता है, बिना किसी रूपसज्जा के भीतर से बाहर तक सुसज्जित। भीष्म साहनी सिर्फ कथाकार ही नहीं हैं नाटककार भी हैं, सिर्फ नाटककार ही नहीं एक कुशल रंगकर्मी भी हैं। जगतगति का उन्हें पूरा-पूरा अहसास है। 'खावे और सोवे में' नहीं 'जागे और रोवे' की मनोदसा में जीवन को जीते रहने में यकीन है उनको। गहराते अंधेरे के बीच से कोई रोशनी फूटे और अंधेरे से पिण्ड छूटे। यही भीष्म जी की चाहत थी।

देश के विभाजन से उपजी बर्बर स्थितियों के चश्मदीद गवाह रहे भीष्म साहनी। उस आग की दरिया को पार करते हुए। भोक्ता की नीजी अनुभूतियों की सर्वजनीन अभिव्यक्ति का कथानक भीष्म साहनी के कथा साहित्य का मूल स्वर है। भीष्म साहनी की रचना दृष्टि को रेखांकित करते हुये उनके बड़े भाई बलराज साहनी कहते हैं- ''साधारण लोगों की छोटी-छोटी बातों को वह खुद अपनी आंखों से देखता है और उन लोगों की सामाजिक एवं व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है, पात्रों को कल्पनाओं में नहीं जीवन में खोजता और चुनता है।'' अजात शत्रु का जीदन जीते हुये हिन्दी साहित्य के कुशल शब्द शिल्पी भीष्म दा का हम सभी से जुदा होना बहुत दिनों तक सालता रहेगा।

०८ अगस्त १९१५ में रावलपिण्डी में जनमे भीष्म साहनी की पारिवारिक पृष्ठभूमि आर्य